11075CH07

## सप्तमः पाठः

# भव्यः सत्याग्रहाश्रमः

प्रस्तुत पाठ श्रीमती क्षमारावकृत–सत्याग्रहगीता के चतुर्थ अध्याय से उद्धृत किया गया है। आधुनिक कवयित्री ने साबरमती के आश्रम और महात्मा गांधी के आदर्श आचरण का वर्णन इसमें किया है। संस्कृत कविता का वर्तमान प्रसंगों में प्रस्तुतीकरण लेखिका का उद्देश्य है। वस्तुतः आधुनिक युग में देश के कोने–कोने में जिस आतंकवाद की जड़ जमती जा रही है और अपने लक्ष्य (स्वार्थ) की सिद्धि में जिस तरह के नृशंस और निर्दय मार्ग अपनाये जा रहे हैं, वे राष्ट्र के लिए घातक हैं। आज उनके प्रतिरोध में प्रत्येक व्यक्ति को गांधी बनना है, अन्याय के विरोध में खड़ा होना है और सत्य, अहिंसा तथा सदाचार का मार्ग अपनाना है। तभी संपूर्ण मानव का कल्याण होगा।

**ततस्तीरे सबर्मत्या नाम्ना सत्याग्रहाश्रमः।**
**महात्मा स्थापयामास सदनं सानुयात्रिकः।।1।।**

**सत्यमेव प्रमाणं यन्मनोवाक्कायकर्मभिः।**
**तस्मिन् पुण्यनिवासे तद् यथार्थो हि स आश्रमः।।2।।**

**अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यापरिग्रहौ।**
**स्वदेशवस्तुनिष्ठा च निर्भीतरुचिसंयमः।।3।।**

**अन्त्यजानां समुद्धारो नवैतानि व्रतानि हि।**
**भारतोत्कर्षसिद्ध्यर्थमाश्रमस्य महात्मनः।।4।।**

**निर्ममो नित्यसत्त्वस्थो मिताशी सुस्मितानन:।**
**सुकलत्रः शिशुप्रेमी पितेवाश्रमवासिनाम्।।5।।**



© NCERT not to be republished

ध्यायन् क्लेशान् स्वबन्धूनां तद्धितैकपरायणः।
विराजते मुनिर्बुद्धो बोधिद्रुमतले यथा॥6॥

साक्षात्सत्यप्रदीपोऽयं दीप्यतेऽखिलभारते।
स्वबन्धूनामपाकुर्वन् हृदयान्मोहजं तमः॥7॥

बलं सर्वबलेभ्योऽपि सत्यमेवातिरिच्यते।
सत्यवानबलः श्रेयान् सबलात् सत्यवर्जितात्॥8॥

तद् ये चरन्ति धर्मेण प्रजा वा राज्यशासकाः।
समृद्धिर्जायते तेषामन्येषां तु क्षयो ध्रुवः॥9॥

इति तत्रभवान् गान्धीराख्याति सहवासिनः।
अनुयायिजनांश्चान्यान् वचसा लेखतोऽपि वा॥10॥

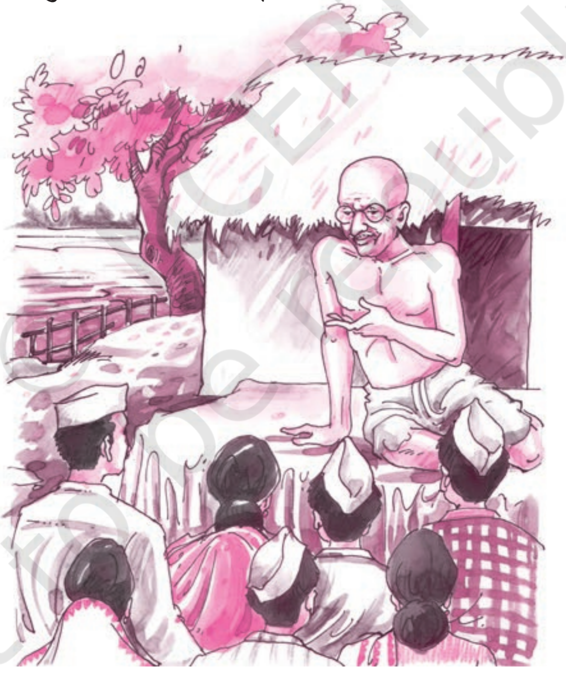

महात्मा प्राह–

अधर्ममपि दृष्ट्वा यः प्रतिबद्धुं न वाञ्छति।
सत्ये सत्यपि यो भीत्या न च तत् प्रतिपद्यते॥11॥

© NCERT not to be republished

क्लीबयोरुभयोश्चापि निष्फलं जीवनं तयोः।
स्वार्थनाशभयाद् यत् तौ रक्षतोऽनृतजीवनम्॥12॥

हिंसामपि समाश्रित्य वरं मृत्युमुखे गतम्।
न पुनः स्वात्मरक्षार्थं कृतं निन्द्यं पलायनम्॥13॥

करोति मनसा हिंसा स हि भीरुः पलायिता।
आत्मनो मृत्युकातर्यादात्महिंसा करोति च॥14॥

अत एव मया दत्तं नाम सत्याग्रहाश्रमः।
सत्यानुयायियुक्ताया विनीतवसतेर्मम॥15॥

इति सत्यादिधर्माणाममोघं बलमद्भुतम्।
वर्णयन् ग्राहयामास व्रतानि सुबहून् गुरुः॥16॥

अपराधे कृतेऽप्यन्यैः सत्यसारे तदाश्रमे।
स्वीकृत्य दोषसर्वस्वमुपवासैस्तपस्यति॥17॥

आश्रमाद् बहिरन्यत्र लोकानां कलहेऽपि सः।
स्वमेव कारणं मत्वा तत् कलङ्केन दूयते॥18॥

आत्मवत्सर्वभूतानि पश्यतोऽस्य पदानुगाः।
गुणैः परवशीभूता व्यवर्धन्त सहस्रशः॥19॥

सर्वदाप्याचरिष्यामः सत्यादिनवकं व्रतम्।
इति जातसमुत्साहैः सधैर्यं निश्चितं जनैः॥20॥

## शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

| | | |
|---|---|---|
| **सबर्मत्या** | – | साबरमतीनामनद्याः, साबरमती नदी के। |
| **सानुयात्रिकः** | – | अनुयात्रिभिः सहितः बहु० स०, अपने अनुयायियों के साथ। |
| **अस्तेयम्** | – | अचौर्यम्, चोरी नहीं करना। |
| **अपरिग्रहः** | – | धनसञ्चयाभाववृत्तिः, धनसञ्चय न करने का स्वभाव। |
| **रुचिसंयमः** | – | रुचि-स्वाद पर नियन्त्रण रखना। |
| **अन्त्यजानां समुद्धारः** | – | हरिजनोद्धारः, हरिजनों का उद्धार। |



© NCERT not to be republished

| | | |
|---|---|---|
| **नित्यसत्त्वस्थः** | – | नित्यं सत्त्वे स्थितः, सर्वदा सत्त्वगुण से युक्त। |
| **मिताशी** | – | परिमितभोजनवान्, मितम् अश्नाति तच्छीलः, कम भोजन करने वाला। |
| **मृत्युकातर्याद्** | – | मृत्योः कातर्यात् (दुःख) भयात्, मृत्यु के डर से। |
| **सुस्मिताननः** | – | सुस्मितम् आननं यस्य सः, प्रसन्न मुख वाला। |
| **सुकलत्रः** | – | शोभनं कलत्रं यस्य सः, बहु० स०, सुन्दर स्त्री वाला। |
| **ध्यायन्** | – | ध्यै धातु शतृ० प्र० पु०, प्र० ए० व०, ध्यान करते हुए। |
| **श्रेयान्** | – | प्रशस्य शब्द ईयस् प्रत्यय, पुं० प्र० ए० व०, अधिक कल्याणकारी। |
| **विनीतवसतेः** | – | विनीता वसतिः = विनीतवसतिः, तस्याः, सज्जनों की वस्ती। |
| **पदानुगाः** | – | पदानि अनुगच्छन्ति ये ते, उपपद तत्पुरुष, पीछे चलने वाले। |
| **सधैर्यम्** | – | धैर्येण सह, अव्ययीभाव, धैर्यसहित। |

## अभ्यासः

**1. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया देयानि**

(क) अयं पाठः कस्माद् ग्रन्थात् सङ्कलितः।
(ख) महात्मा (गाँधी) सत्याग्रहाश्रमं कस्याः (नद्याः) तीरे स्थापयामास?
(ग) आश्रमवासिनां कृते महात्मा कीदृशः आसीत्?
(घ) अस्मिन् पाठे महात्मनः तुलना केन सह कृता?
(ङ) समृद्धिः केषां जायते?
(च) सत्याग्रहाश्रमः इति नाम केन कथं च दत्तम्?
(छ) अस्य पाठस्य रचयित्री का?
(ज) महात्मनः व्रतानि कानि आसन्?
(झ) महात्मा केषां दोषैः उपवासमकरोत्।
(ञ) किम् पश्यतः गान्धिनः गुणैः जनाः तस्य पदानुगाः जाताः?

**2. अधोलिखितश्लोकानां सान्वयं मातृभाषया अर्थं लिखत।**

(क) अहिंसा सत्यमस्तेयं ........................ निर्भीतरुचिसंयमः।।
(ख) साक्षात् सत्यप्रदीपोऽयं ........................ हृदयान्मोहजं तमः।।
(ग) अधर्ममपि दृष्ट्वा ........................ तत् प्रतिपद्यते।।

**3. अधोलिखितपदानां परिचयं दत्त**

समुद्धारः, प्रतिबद्धुम्, समृद्धिः, ध्यायन्, दृष्ट्वा, समाश्रित्य, दत्तम्, मत्वा

**4. सविग्रहं समासनाम लिखत**

(क) सत्याग्रहाश्रमम्
(ख) महात्मा
(ग) ब्रह्मचर्यापरिग्रहौ
(घ) सुकलत्रः
(ङ) निष्फलम्

**5. सत्याग्रहमहत्त्वमधिकृत्य मातृभाषया दश वाक्यानि लिखत**

**6. अधोलिखितशब्दानां सन्धिच्छेदं कुरुत**

नवैतानि, मिताशी, मुनिर्बुद्धः, दीप्यतेऽखिलभारते, सत्यपि, पितेव, व्यवर्धन्त, सर्वदाप्याचरिष्यामः।

**7. रिक्तस्थानानि पूरयत**

(क) ततस्तीरे ...................... सत्याग्रहाश्रमः।
(ख) अहिंसा ...................... प्रतिग्रहौ।
(ग) अधर्ममपि ...................... वाञ्छति।
(घ) सत्ये सत्यपि ...................... प्रतिपद्यते।
(ङ) आश्रमाद् ...................... दूयते।

## योग्यताविस्तारः

**भावविस्तारः**

(1) .................. इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि। (*यजुर्वेदः - 1/5*)

(2) सत्यमेवानृशंसं च राजवृत्तं सनातनम्।
तस्मात्सत्यात्मकं राज्यं सत्ये लोकः प्रतिष्ठितः।।

(3) सत्यस्य वचनं साधु न सत्याद् विद्यते परम्।
सत्येन विधृतं सर्वं सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।।

(4) सत्यार्जवं परं धर्ममाहुर्धर्मविदो जनाः।
दुर्जेयः शाश्वतो धर्मः स च सत्ये प्रतिष्ठितः।।

© NCERT not to be republished

(5) नासत्यवादिनः सख्यं पुण्यं न यशो भुवि।
दृश्यते नापि कल्याणं कालकूटमिवाश्नतः।।

(6) 'सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्।' (*योगदर्शनम् - 2/36*)

(7) सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन्। (*ऋग्वेदः*)

(8) यः समुत्पतितं क्रोधं क्षमयैव निरस्यति।
यथोरगस्त्वचं जीर्णां स वै पुरुष उच्यते।।
(*वाल्मीकिरामायणम् - 5/53/6*)

(9) अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः। (*योगदर्शनम्, साधनपादः*)

(10) निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः।
शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्विषम्।।
(*श्रीमद्भगवद्गीता-4/21*)

© NCERT not to be republished